DOI: 10.13140/RG.2.2.31161.54889

शहरनामा: जमशेदपुर
(“जो हूँ ‘शहर जमशेदपुर’ हूँ जनाब! इसका बेहद लिहाज कीजियेगा!!”)

डॉ. मिथिलेश कुमार चौबे
संपादक, जमशेदपुर रिसर्च रिव्यु
संपर्क-9334077378
Email-editorjrr@gmail.com

यह जमशेदपुर का शहरनामा है.

22° 44' उत्तरी अक्षांश तथा 86° 20' पूर्वी देशांतर पर बसे जमशेदपुर की सतह पर लोहे का कारखाना है और सतह के नीचे लोहे के खानें. लोहे में चुम्बक है और इस चुम्बक के सम्मोहन से बंधें हैं, जमशेदपुर के 15 लाख लोग जो इस शहर से जानलेवा मुहब्बत करते हैं. उनके लिए टाटा को टाटा करना बहुत मुश्किल है. रोजी-रोटी की तलाश में अगर शहर छुट भी जाय तो इसकी मोहब्बत और कसक तमाम उम्र बरकरार रहती है.

जमशेदपुर के लोगों की अपनी एक अलग ठसक होती है. जहाँ भी होते हैं, उनकी जुबान में बसा “ठ” बता देता है कि टाटा वाले हैं. जहाँ भी रहेंगे अलग ग्रुप बनाकर रहेंगे, और चढ़ कर रहेंगे. बेंगलोर, नागपुर, पुणे, दिल्ली.......कही भी चले जाइये, टाटा वाले अलग से पहचाने जाते हैं. लोहे की तरह ‘सख्त’, इस्पात की तरह ‘लचीले’, बाक्साइट की तरह ‘चमकीले’ और युरेनियम की तरह ‘रेयर’ और ‘एलिट’.

जमशेदपुर के लोगों की ठसक और नफ़ासत अमरोहा में जन्मे प्रसिद्ध शायर ‘जौन एलिया’ के अंदाज की याद ताज़ा देती है:-

“मै जो हूँ
‘शहर जमशेदपुर’ हूँ जनाब!
इसका बेहद लिहाज कीजियेगा”

एक दौर था जब जमशेदपुर को ‘पोंगा’ और ‘पगार’ से जाना-पहचाना जाता था. जमशेदपुर तब भी कोस्मोपोलिटन टाउन था और आज भी शतप्रतिशत कोस्मोपोलिटन टाउन है. और हो भी क्यों नही? जिस शहर की स्थापना एक पारसी करता है, नामकरण एक ब्रिटिश वायसराय करता है, शहर की प्लानिंग एक अमेरिकन करता है और शहर के दिल कहे जाने वाले जुबली पार्क का डिज़ाइन एक जर्मन वनस्पतिशास्त्री करता है. बिहार एसोसिएशन, मद्रासी सम्मेलनी, बंगाल क्लब, उत्कल एसोसिएशन, महाराष्ट्र मित्र-मंडल, केरला समाजम और आंध्र एसोसिएशन- जमशेदपुर में पूरा इंडिया मिलेगा. लेकिन, जब सब साथ हैं, तब सब एक हैं - खालिस जमशेदपुर वाले!

जमशेदपुर वाले हर चीज को अपने स्टाइल में इम्प्रोवाइज करते हैं. अपने स्वाद के हिसाब से! यही कारण है कि जमशेदपुर में मद्रास से बढ़िया इडली-डोसा मिलता है. बंगाल से बढ़िया रसगुल्ला मिलता है, बिहार से अच्छी लिट्टी मिलती है, यहाँ की पानीपूरी चाट और पापड़ी चाट मुंबई चौपाटी से ज्यादा स्वादिष्ट है.

जमशेदपुर दुनिया में इकलौता ऐसा शहर है जहां लोग दोसा में अंडा, चिकन, चाउमीन, हरी सब्जियाँ, कुछ भी डाल देंगे और आप उंगलियाँ चाटते रह जायेंगे. यह जमशेदपुर के स्ट्रीट फ़ूड की स्पेशलिटी है.

झारखण्ड में शराबबंदी नही है. इसलिए जमशेदपुर में शराब के शौकीनों की मौज है. शाम की बैठकी होटलों में नही बल्कि किसी चिकेन ठेले पीछे के अँधेरे किनारों में- जिन्हें जमशेदपुरिया लहजें में ‘कोनट्टी’ कहा जाता है. जमशेदपुर के सयाने लोग जो शराब नहीं पीते, मंडली में बाकायदा कोल्डड्रिंक्स का ग्लास लेकर, दारुबाज मित्रों के साथ बैठ कर चखना खाने में परहेज नही करते.

पियक्कड़ी जमशेदपुर के नए खून का शाश्वत शौक है, जो न उम्र देखती है, न ओहदा, न जाति देखी है और न धर्म. असली समाजवाद तो दारू की दुकानों के किनारे सजे चिकन, पकोड़े के ठेलों के पीछे, अँधेरे कोनों में देखने को मिलता है, जहाँ हर शाम समाजवाद उतरता है. दारु के सानिध्य में जब संगदिल सनम की याद आती है तो मोहब्बत के फफोले फूट पड़ते हैं, आंसुओं का सैलाब फूट पड़ता है और जबान से शेर- ओ- शायरी की जमशेदपुरिया लहजे में बरसात होने लगती है, तब तक, जबतक कि कोई हमप्याला लोकल गालियाँ देकर ख़ामोश न करा दे.

शहर की पान गुमटियों में पान सुपारी की जगह अब गुटखा, पान मसाला और तम्बाकू खूब बिकते हैं. जमशेद्पुरियों के पास गुटखे की पुड़िया को दांतों से फाड़ने और फिर उसे एक खास स्टाइल के साथ दोनों हाथों की उंगलियों से पकड़कर बड़ी नफ़ासत से चेहरे को आकाश की तरफ उठाकर मुंह के अन्दर डालने का सर्टिफाइड तरीका हैं. गुटखा के अन्दर जाते ही चेहरे पर ऐसे भाव आते हैं मानो परमपिता परमेश्वर से सीधा साक्षत्कार हो गया हो. एक दिन मैंने अपने एक शिष्य से पूछा- “इसमें ऐसा क्या है?” उसके उत्तर ने मुझे भाव-विभोर कर दिया- “सर इससे कॉन्फिडेंस मिलता है, मुंह बंद रहता है, कम बोलने से वजन बना रहता है, इज्जत बची रहती है. सिर्फ इशारेबाजी से काम चल जाता है.” लेकिन, ट्रेजडी यह है कि पान मसाला, तम्बाकू और गुटखा जिस्म में जहर भरता है. सरकार ने बिक्री पर बैन लगा रखा है. फिर भी, हर पान गुमटी में बिकता हैं सामने से नही बल्कि पीछे से. नशे का कारोबार भी बढ़ रहा है. स्कूलों के आसपास पेडलर सक्रिय रहते हैं. प्रशासन थोड़ा संजीदा हो जाए तो शहर थोड़ा और निखर जाए.

बिहार में शराब की बिक्री पर प्रतिबन्ध है, इसलिए बिहार से शौकीनों की टोलियां बाबा के दरबार में देवघर पहुंच जाती हैं. माथे पर भारी भरकम त्रिपुंड लगाकर बाबा के दर्शन और फिर कंठ तक सोमरस. बिहार जितना राजस्व गवांता है, उतना झारखंड के राजस्व खाते में आ जाता है. आखिर बिहार और झारखंड तो कभी एक ही तो थे.

21वीं सदी के इस दूसरे दशक में शहर में शादियों का ट्रेंड बदल गया है.पहले शादियों में नाचने के लिए दारू जरूरी था, लेकिन अब ट्रेंड बदल गया है. ड्रिंक भी करेंगे और शादियों में नाचेंगे भी नहीं. अब पहले वाली बात नहीं रही कि तीन पैग दारु पीने के बाद 3 घंटे तक नाचना ही पड़ेगा. नागिन डांस का ट्रेंड कम हो रहा है, भोजपुरी गाने फैशन मे हैं. एक दौर था जब जमशेदपुर की शादियों में बारात 7 शाम तक बजे तक कन्या के दरवाजे लग जाया करती थी. अब बारात रात के 11 बजे के बाद लगती है. पंडितजी के सिर पर शुद्ध तानों की पिस्तौल तनी रहती है. “जल्दी-जल्दी मंत्र पढ़िए नहीं तो दक्षिणा नहीं मिलेगा!” पंडितजी भी स्मार्ट हो गए है. सीधे सात फेरे करवाने के बाद क्षमा याचना का श्लोक पढ़ देते हैं. शादी के पूरी !

नए वाले जमशेदपुर के पुराने धंधों में एक धंधा सबसे ज्यादा चल रहा है. हमें याद है हम बचपन में 3 महीने में एक बार सैलून का दर्शन करते थे. लेकिन, आज के लड़कों के हेयर स्टाइल महीने में तीन बार बदलते हैं. हमारे जमाने का ठाकुर अब हेयर ड्रेसर बन गया है. उसका का रेट सुनिएगा तो हिल जाइएगा.

कहते हैं कि काशी के वासी तीन खतरों से बच गए तो लंबी जिंदगी जीते हैं – रांड, सांड और सीढ़ी! उसी तरह अगर आप जमशेदपुर में नए हैं तो तीन चीजों से बच कर रहिये. स्कूटी चलाने वाली लड़कियों से, रोड के किनारे छिप कर खड़े हैलमेट चेक करने वाले सिपाहियों से और रंगबाज ऑटोवालों से. टाटा के ऑटो चालक स्टाइल के मामले में रजनीकांत से भी चार कदम आगे हैं- उलझिएगा तो पक्का कुटाईएगा. पुलिस भी उनका कुछ नही बिगाड़ पायेगी. वे सीधे-सीधे मंत्री तक को फोन लगा देते हैं.

जमशेदपुर में अगर शांति से मौजमस्ती करनी है, सेल्फी लेनी है तो दलमा अभ्यारण्य घूमिये, डिमना-लेक जाइए, जादूगोड़ा रंकिनी मंदिर हो आइये. लेकिन, अगर आप परिवार के साथ हैं तो सूरज ढलने से पहले शहर लौट आइये.

जुबली पार्क सैर-सपाटे के लिए शानदार जगह हैं. यहाँ कई सेल्फी पॉइंट हैं. पास में ही एक पशु-पक्षी अभ्यारण्य हैं- छोटा है लेकिन बच्चों को पसंद आएगा. जुबलीपार्क की जैव विविधता अद्भुत है- वनस्पतिशास्त्र के विद्यार्थियों के लिए परफेक्ट जगह!

लोकल पुलिस ना दोस्त है, ना दुश्मन है. अगर आप अपनी नयी नवेली पत्नी के साथ भी जुबली पार्क में घूम रहे हैं तो भी अपना मैरिज सर्टिफिकेट साथ रखिये. नही तो कुछ खुचरा रूपये अपने पास रहिये. पकड़ने वाले गूगल पे से पैंसा नहीं लेते.

जमशेदपुर में बड़ी-बड़ी गाड़ियों पर प्रेस कास्टीकर लगा हुआ मिलेगा. ज्यादा करीबी बनकर पूछिएगा तो पता चलेगा, जनाब सोशल मीडिया पर एक्टिव हैं तथा हैलमेट जाँच से बचने के लिए वाहन पर प्रेस का स्टीकर लगा कर घूम रहे हैं.

अगर आप जमशेदपुर में नए हैं तो तीन तरह के भोजनों का आनंद लिए बगैर शहर मत छोड़िएगा. किसी साफ-सुथरे ठेले पर बटर मसाला दोसा खाईये, गोलगप्पे का स्वाद लीजिये और अगर शाकाहारी नही हैं तो स्ट्रीट चाइनीज फ़ूड का आनंद लीजिये. उसके बाद एक कप कुल्हड़ वाली कड़क चाय आपका दिन बना देगी.

गर्मी के दिनों में आप बिष्टुपुर में मसाला कोल्डड्रिंक्स का आनंद ले सकते हैं. बिष्टुपुर में कई आइसक्रीम पार्लर हैं, जहाँ कड़ाके की ठण्ड में भी देर रात 'ठण्ड को ठण्ड ने काटने वाले' मिल जायेंगे.

जमशेदपुर मौज, मेले और सैर-सपाटे के शौकीनों का शहर है. मेले और ठेले यहाँ की पहचान हैं. जिस ठेले पर ज्यादा भीड़ लगी हो वहां आप निसंकोच होकर खा-पी सकते हैं. जमशेदपुर में ऐसा एलीट कल्चर नही है कि पैसे वाले लोग सिर्फ बड़े रेस्ट्रोरेन्ट में ही खाएंगे. उल्टा भी हो सकता है. BMW वाले किसी ठेले पर डोसा, चाट, पपड़ी, गोलगप्पा आदि खाते हुए दिख जाएंगे, और निम्न -मध्यम वर्ग का किशोर अपनेस्कूल दोस्तों के साथ किसी बड़े रेस्टोरेंट में अपना जन्मदिन सेलिब्रेट करता दिख जायेगा.

जमशेदपुर में 'फास्ट फ़ूड का कल्चर' बहुत 'सॉलिड' है. अब तो कोविड महामारी के बाई प्रोडक्ट के रूप में 'टेक अवे फ़ूड कल्चर' भी तेजी से रफ़्तार पकड़ रहा है. लेकिन फास्ट फ़ूड वालों से घर पर खाना मांगते समय सतर्क रहिए. अगले दिन आपका पेट खराब हो जाए तो इसकी जिम्मेदारी उनकी नहीं है. अगर स्वस्थ रहना है तो थोड़ा खान-पान पर ध्यान देने और सात्विक जीवन जीने की कोशिश करनी पड़ेगी. स्ट्रीट फ़ूड टेस्ट बदलने के लिए कभी-कभी खाइए, आदत मत बनाइये. और, भाई साब, राज्य में शराब पर प्रतिबन्ध नही है लेकिन इसका अर्थ यह नही कि हर शाम रंगीन की जाए. जमशेदपुर में अच्छी चिकित्सा सुविधा की उम्मीद उतनी ही है जितनी बरेली के बाजार में वर्षों पहले खोये झुमके के मिलने की उम्मीद. गलती से बीमार पड़ गए तो या तो आपकी जान जाएगी या कि आपका फ्लैट बिकेगा, या दोनों जाएंगे.

जुस्को ने शहर में बहुत सारे जॉगर्स पार्क बनाए हैं. स्वस्थ रहना हैं तो सुबह-सुबह वहां टहल लीजिए. दोस्तों के साथ गपशप कर लीजिए और अगर मूड बन जाए तो सामने के ठेले पर एक कप चाय भी पी लीजिये. प्रतिदिन सुबह- सुबह जुबली पार्क में आपको शहर के बड़े बड़े व्यवसायी जॉगिंग करते हुए मिल जाएंगे. परन्तु आप देखेंगे कि उनमें से कई का वजन जॉगिंग करने के बाद भी घटता नही बल्कि बढ़ता ही जाता है. कारण है, जॉगिंग करने के बाद यार लोग ठेले पर दोस्तों के साथ तीन कप चाय पीने और एक बटर- मसाला डोसा खाने के बाद, दो-चार डोसे घर वालों के लिए भी पैक करा लेते हैं. जमशेदपुर के जॉगर्स पार्क के बगल में लाइन से लगे चाय और डोसे के ठेलों की असली आमदनी तो इन्हीं मॉर्निंग वाकर्स से होती है.

जमशेदपुर के लोग मेहमाननवाज होते हैं. लेकिन मेहमानवाजी घर पर नही, बल्कि घर के बाहर! वीक एंड में हाईवे पर पार्टी करने का चलन तेजी से बढ़ रहा है.

मेले और मस्ती तो जमशेदपुर की जान हैं. पिछले एक दशक में जमशेदपुर के 'मेला और उत्सव संस्कृति' में कुछ नए आयाम जुड़ें हैं. दिसंबर के महीने में हॉर्टिकल्चरल सोसाइटी, जमशेदपुर द्वारा आयोजित किये जाने वाले फूलों के सालाना मेले को लोगों ने फूलों के उत्सव में बदल दिया है. पिछले कुछ सालों में 'जैम स्ट्रीट' जमशेदपुर शहर की नयी पहचान बनकर उभरा है. रविवार सुबह के वक्त बिष्टुपुर की सड़कों पर शहरवासी इकट्ठा होते हैं. स्ट्रीट डांस, डांडिया, रॉक बैंड, नुक्कड़ नाटक, मैजिक शो, बाक्सिंग, कराटे, बास्केटबाल, साइक्लिंग, रोलर स्केटिंग, योगा, जुंबा और गोल्फ का आयोजन सड़कों पर ही होता है. इसके अलावा जूस, सलाद, सूप, हेल्थ फ़ूड, कोलकाता का स्ट्रीट फूड, कबाब, मुगलाई, सैंडविच, बड़ा पाव, मसाला कोल्ड ड्रिंक, मद्रास का दोसा, वड़ा, बिहार का लिट्टी चोखा और झारखंड का चिकन चावल सबकुछ सड़कों पर ही मौजूद रहता हैं. सारा नजारा आपको मंत्रमुग्ध कर देने के लिए काफी है.

जनवरी के महीने में गोपाल मैदान में आयोजित होने वाला विंटर कार्निवाल अब शहर के युवाओं के दिलों की धड़कन बन गया हैं. इस वर्ष 12 जनवरी की कड़कती ठण्ड में जब हजारों युवा चेहरे प्रसिद्ध रॉक बैंड 'इंडियन ओसियन' की लरजती धुनों और बिजली तरह चमकती रौशनी में झुमने लगे तो लगा मानो जमशेदपुर के आकाश में हजारों इंद्र धनुष उभर आये हों.

जमशेदपुरवासी उत्सवजीवी लोग हैं- ग्राम श्री मेला से लेकर स्वदेशी मेला तक तथा टुसू मेले से लेकर आसिवासी महोत्सव तक - शहर के लोग हर मेले और त्यौहार को गजब उत्साह के साथ एन्जॉय करते हैं. यहाँ त्योहारों और मेलों का कोई धर्म या जाति नही. ये ऐसे सामूहिक सांस्कृतिक उत्सव हैं जो जमशेदपुर की जीवंतता और विविधता को दर्शाते हैं.

पहले जमशेदपुर में सिर्फ छोटे बड़े मोहल्ले हुआ करते थे और हर मोहल्ले की अपनी एक अलग बुनावट होती थी, जहां होली, दिवाली, दुर्गा पूजा, गणेश पूजा, सरस्वती पूजा आदि सामूहिक रूप से मनाया जाता था. लेकिन अब फ्लैट कल्चर आ गया है. हर फ्लैट की अपनी सोसाइटी है. हर सोसाइटी में दुर्गा पूजा, गणेश पूजा, सरस्वती पूजा, लोहड़ी, शिव चर्चा जैसे कार्यक्रम होते रहते हैं.

जमशेदपुर के लोग संस्कारी और प्रोग्रेशिव दोनो हैं. कुछ साल पहले जुबली पार्क में टाटा साहब की मूर्ति को जब एक बड़े बैरिकेड से सुरक्षित कर दिया गया था, तो लोगों को ज्यादा कुछ नहीं समझ में नही आया था. लेकिन, मुझे वजह तब समझ में आई जब एक मंदिर के सामने टाटा साहब की मूर्ति के पास मैंने कुछ महिलाओं को नारियल फोड़ते और उन्हें फूल-माला अर्पित करते हुए देखा. अपने शहर के संस्थापक के प्रति श्रद्धा दिखाने के लिए शहरवासी किसी हद तक जा सकते हैं.

जमशेदपुर के स्त्रियों के तीन बड़े शौक हैं. पहला, बच्चों को अच्छे अंगेरजी स्कूल में पढ़ाना, दूसरा, एक अच्छा सा फ़्लैट खरीदना है और तीसरा सोसायटी के लोगों को अपने बच्चों की उपलब्धियां के बारे में बताना.

जमशेदपुर की स्त्रियाँ साहित्य के क्षेत्र में पुरुषों से ज्यादा सक्रिय हैं . यहाँ कवियों की तुलना में कवित्रियों की संख्या ज्यादा है. वे खूब लिखती हैं सोशल मीडिया पर भी खूब दिखती हैं. नयी किताबों का विमोचन भी खूब होता हैं, लेकिन अधिकतर नयी किताबें दुकानों का मुंह नही देख पाती. दरअसल जमशेदपुर में किताबों का कल्चर धीरे-धीरे मर रहा है. लेकिन, इन स्थानीय साहित्यकारों की वजह से ही किताब संस्कृति की थोड़ी बहुत सांसें चल रही हैं.

अपने खिलंदरपन और मस्ती के लिए मशहूर जमशेदपुर के लोगों में कला और साहित्य के लिए एक अजीब किस्म की संजीदगी है. तुलसी भवन, रविन्द्र भवन, मिलानी हाल, बंगाल क्लब में आदि सामुदायिक केन्द्रों में साहित्य, संगीत, नृत्य और गीतों की महफिलों का आगाज़ हर शाम होता हैं. कथक नृत्यांगना सितारा देवी, बिरजू महाराज, शोभना नारायण, शहनाई वादक उस्ताद बिस्मिल्लाह खान, गायक पंडित भीमसेन जोशी, पंडित जसराज, पंडित विश्वमोहन भट्ट, तबला वादक जाकिर हुसैन, किशन महाराज, गुदई महाराज, बांसुरी वादक हरिप्रसाद चौरसिया, वायलिन वादक पंडित वीजी जोग, सितारवादक पंडित रविशंकर, उस्ताद विलायत अली खां, संतूरवादक पंडित शिवप्रकाश शर्मा, आदि; जो भी उस्ताद इस शहर में आया, शहर का मुरीद होकर लौटा-इस वादे-इरादे के साथ कि वह बार बार यहाँ आएगा.

जमशेदपुर की अपनी मौज मस्ती वाली संस्कृति हैं अपना रंजो-गम भी है. शहर में कचरा निष्पादन की कोई सुदृढ़ व्यवस्था नही है, खरकई नदी का दूषित हो गया हैं, बच्चो की उच्च शिक्षा के लिए अच्छे विश्वविद्यालय नहीं हैं, किशोर वय के लड़के नशे के गुलाम हो रहे हैं, हर नुक्कड़ पर खुलेआम तम्बाकू, गुटखा और पान मसाला सरकारी पाबन्दी के बाद भी बिक रहा हैं, तेज रफ़्तार गाड़ियों से आम शहरियों की दर्दनाक मौतें हो रही हैं, शहर में एक भी बढ़िया सरकारी अस्पताल नही है, एअरपोर्ट अभी भी दूर का सपना है, शहर में पब्लिक ट्रांसपोर्ट नदारद है. लेकिन, फिर भी, अपनी तमाम संगतियों और कमियों के बाद भी जमशेदपुर एक जिंदा शहर है, क्योकि यहाँ के लोग जिंदा हैं और वे अपने शहर को एक रवायत की तरह जीते हैं और फिर इसे बड़ी मोहब्बत से इत्र की तरह फ़िजाओं में बिखेर देते हैं.

समाप्त